भजन

तुम अपनी रूहें जगा रहे हो,
सुना के वाणी अखंड अपनी
झूठे बंधन छुड़ा रहे हो

1 हटा के ये खेल अब नजर से
अपने निज सुख दिखा रहे हो

2 उपजाया था जो दिल में तुमने
वो राज खुद ही बता रहे हो

3 जिन वायदों को हम भूल चुके थे
याद उनहें अब दिला रहे हो

4 लिया नजर में ये खेल पहले
अब नजरें इससे हटा रहे हो